国家级教学成果二等奖系列教材

印度语言文学国家级特色专业建设点系列教材

हिन्दी पठन पाठ्य-क्रम

印地语阅读教程(2)

邓　兵◎编　著

世界图书出版公司

国家级教学成果二等奖系列教材

印度语言文学国家级特色专业建设点系列教材

हिन्दी पठन पाठ्य-क्रम

印地语阅读教程(2)

邓　兵◎编　著

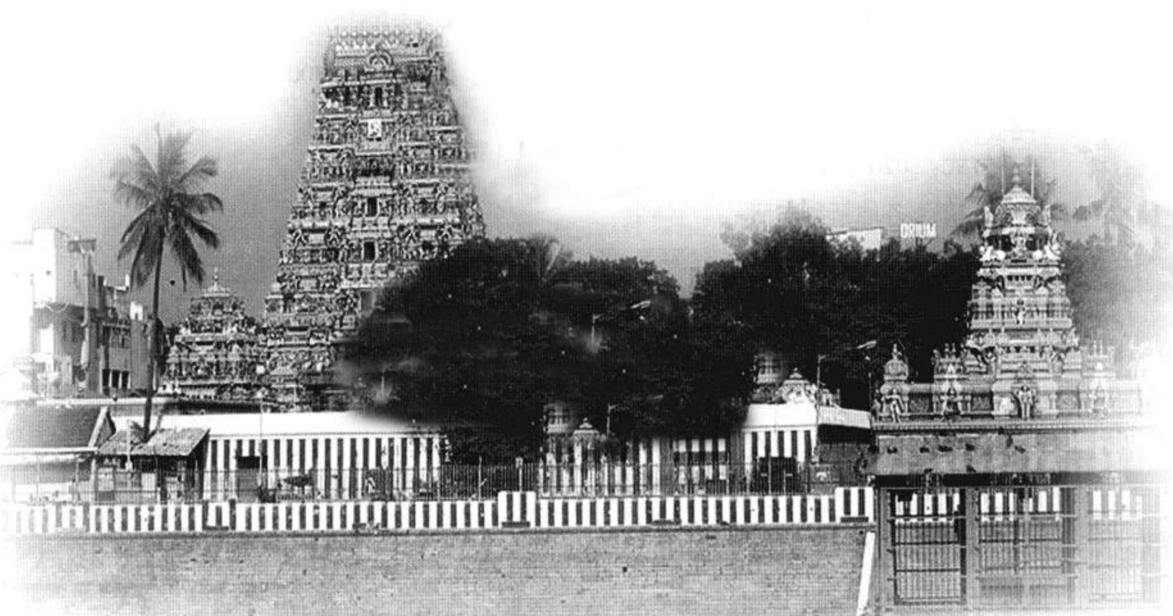

世界图书出版公司

广州·上海·西安·北京

图书在版编目（CIP）数据

印地语阅读教程．2／邓兵编著．—广州：世界图书出版广东有限公司，2013.4
ISBN 978-7-5100-5935-3

Ⅰ．①印… Ⅱ．①邓… Ⅲ．①印地语—阅读教学—高等学校—教材 Ⅳ．①H712.94

中国版本图书馆CIP数据核字（2013）第070114号

印地语阅读教程（2）

策划编辑：刘正武
责任编辑：魏路璐
出版发行：世界图书出版广东有限公司
（地址：广州市新港西路大江冲25号　邮编：510300
网址：http://www.gdst.com.cn）
联系方式：020-84451969 84459539　E-mail：pub@gdst.com.cn
经　　销：各地新华书店
印　　刷：广州东瀚印刷有限公司
版　　次：2013年4月第1版　2013年4月第1次印刷
开　　本：787 mm×1092 mm　1/16
字　　数：350千
印　　张：18.25
书　　号：ISBN 978-7-5100-5935-3／H・0817
定　　价：35.00元

版权所有　侵权必究

咨询、投稿：020-84460251　gzlzw@126.com

前言

《印地语阅读教程》为解放军外国语学院亚非语系主任、博士生导师钟智翔教授主持的国家级教学成果二等奖系列教材之一，也是国家非通用语种本科人才培养基地暨印度语言文学国家级特色专业建设点重点建设教材。

《印地语阅读教程》是为大学本科印地语专业二年级学生编写的阅读教材。本教程遵循现代外语教学理念，根据印地语及印地语教学的特点，按照循序渐进的原则，配合《基础印地语》教学，使学生通过本教程的学习，熟练掌握印地语阅读技巧，逐步提高印地语阅读速度，培养正确理解篇章内容和分析归纳的能力，扩大学生的知识面和文化视野，为全面提高印地语综合应用能力打下良好基础。

本教程共 32 课，分为上、下两册，每册 16 课，分别适合本科二年级第一、第二两个学期使用。本教程的课文均选自印地语原文书刊，力求题材、内容和体裁的多样化，尽可能反映出印度知识的多样性。题材上，既有社会、历史、文化、地理等内容，也包括政治、科技等内容；体裁上，既有说明文、记叙文，也有议论文、描写文和书信等。记叙文则既包括游记、回忆录，又包括人物传记等。为了使学生能够阅读到原汁原味的印地语文章，所选课文基本保持了原文的形貌。但鉴于文章的篇幅和学生所掌握词汇等条件限制，考虑到实际教学的需要，也对部分文章的个别词句或段落做了适当的删改，但这些删改并没有影响到原文的基本风貌。

本教程每课内容由课文、生词、注释和练习等部分组成。生词的注释主要采用汉语释义，部分词语不仅注出本课使用义，还给出主要常见使用义；词类和词性主要依据《印地语汉语大词典》和《标准印地语大辞典》用印地语省略形式标注，有些没有收入印地语词典的英语词的词性根据课文中实际使用的词性进行标注。为了培养学生自主学习的习惯和能力，有些词故意没有标注，留待学生在学习过程中通过查阅工具书解决。为方便学生查找和记忆，本教程每册书后附录有该册总词汇表。总词汇表按印地语字母顺序排列，表中

除标明词义、词类、词性外还标明该词所对应的课。

注释部分主要包括：背景知识介绍、难句解释、复杂短语解释、语法等。背景知识主要指课文中出现的词、词组或事件的相关背景知识；难句是指结构复杂或用了精读中尚未学到的表达方式，学生很难通过工具书自行解决的句子；复杂短语是指一些用法上有特殊要求的短语；语法是指精读中尚未学到的语法现象和用法。

练习的目的就是要引导学生进一步理解课文，对语言点解惑释疑，提高分析归纳能力。练习部分主要包括：问答题、正误判断题、填空题、单项选择题、词语解释或翻译、句子或段落翻译、讨论。问答题、正误判断题、单项选择题旨在检查学生对课文大意、基本观点、基本事实的理解和认知；填空题、词语解释练习旨在检查学生对课文中语言点的理解和掌握情况。句子或段落翻译和讨论练习则主要检查学生对课文的语言和内容的综合理解和应用能力。练习量较大，教师可根据实际情况布置练习。另外，每册书后还附有正误判断题、填空题、单项选择题的参考答案，以便于自学者自我检测。

本教材在编写过程中，得到了解放军外国语学院亚非语系教材建设委员会、亚非语言文学专业博士学位授权点以及中国出版集团世界图书出版广东有限公司的大力支持，在此谨表诚挚谢意。

由于编者经验、水平以及素材来源有限，书中疏漏不妥之处在所难免，敬请诸位专家同仁及使用者不吝指正。

编　者

2013 年 3 月

于解放军外国语学院

此为试读，需要完整PDF请访问：www.ertongbook.com

目 录

सत्रहवाँ पाठ सावधान! विश्व की आबादी सात अरब होने वाली है। 1

शब्दार्थ 5

टिप्पणियाँ 8

अभ्यास 8

अठारहवाँ पाठ क्या हम नव-साम्राज्यवाद के सामने घुटने टेक देंगे 13

शब्दार्थ 17

टिप्पणियाँ 20

अभ्यास 21

उन्नीसवाँ पाठ मौसम की जानकारी 26

शब्दार्थ 31

टिप्पणियाँ 34

अभ्यास 34

बीसवाँ पाठ बचपन 40

शब्दार्थ 44

टिप्पणियाँ 47

अभ्यास 48

इक्कीसवाँ पाठ जल-प्लावित कोलकाता 52

शब्दार्थ 56

टिप्पणियाँ 60

अभ्यास 60

बाईसवाँ पाठ बिन चिड़िया का जंगल 65
शब्दार्थ 69
टिप्पणियाँ 72
अभ्यास 73

तेईसवाँ पाठ पुस्तकों ने मुझे बिगाड़ा है 78
शब्दार्थ 83
टिप्पणियाँ 86
अभ्यास 87

चौबीसवाँ पाठ कंप्यूटर नेटवर्क के क्षेत्र में क्रांति — इंटरनेट 91
शब्दार्थ 96
टिप्पणियाँ 99
अभ्यास 100

पच्चीसवाँ पाठ मिठाईवाला 106
शब्दार्थ 112
टिप्पणियाँ 115
अभ्यास 116

छब्बीसवाँ पाठ बनती-मिटती, जलती-बुझती झोपड़-पट्टियाँ 121
शब्दार्थ 126
टिप्पणियाँ 129
अभ्यास 130

सताईसवाँ पाठ जाति प्रथा की सच्चाई 135
शब्दार्थ 140
टिप्पणियाँ 143
अभ्यास 145

अठाईसवाँ पाठ भारत-अमेरिका परमाणु करार से जुड़ी कुछ बुनियादी बातें 150

शब्दार्थ 156
टिप्पणियाँ 159
अभ्यास 159

उनतीसवाँ पाठ   भारतीय स्वतंत्रता-संघर्ष 165

शब्दार्थ 171
टिप्पणियाँ 174
अभ्यास 176

तीसवाँ पाठ   सिंधु घाटी सभ्यता 181

शब्दार्थ 187
टिप्पणियाँ 190
अभ्यास 191

इकतीसवाँ पाठ   भारतीय गणतंत्र के छह दशक — सफलताएँ, अपेक्षाएँ, समस्याएँ 196

शब्दार्थ 202
टिप्पणियाँ 204
अभ्यास 205

बत्तीसवाँ पाठ   बेरोज़गारी की समस्या 210

शब्दार्थ 216
टिप्पणियाँ 218
अभ्यास 219

附录 1：部分练习参考答案 224

附录 2：词汇总表 229

सत्रहवाँ पाठ

सावधान! विश्व की आबादी सात अरब होने वाली है।

जया केतकी

दस वर्षों में जनगणना होती है, अखबार में लेख लिखे जाते हैं, सरकार दावा करती है कि उसके कार्यकाल में जनसंख्या नहीं बढ़ी। एक ओर बुद्धिजीवी लोग चर्चा करते हैं, सेमिनार करते हैं, दूसरी ओर विरोधी सरकार को कोसते हैं। सरकार घोषणाएं करती है और आशा करती है कि बिना किसी ठोस प्रयास के जनसंख्या नियंत्रण में आ जाएगी। पर क्या ऐसा हो सकता है? कोई भी राजनीतिक दल मूल समस्या के प्रति गम्भीर नहीं है, सबको अपने वोट बैंक की चिन्ता है। नेता समाज और जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः जनसंख्या वृद्धि का समाधान उनसे ही शुरू होना चाहिये। अगर किसी एमएलए या एमपी के 2 से ज्यादा बच्चे हैं, तो उनको चुनाव नहीं लड़ने देना चाहिए। समाज के पिछड़े वर्गों में जनसंख्या वृद्धि के प्रति जागरूकता लानी चाहिये। सिनेमा और टी.वी. इसके लिये अच्छा माध्यम हो सकते हैं। एक बच्चे वाली महिलाओं के लिये विशेष योजना और नकद पारितोषक का प्रबन्ध होना चाहिये। सामान्य जन सुविधाओं में आरक्षण भी दिया जा सकता है। ज्यादा बच्चे वालों पर कोई अप्रत्यक्ष कर दन्डस्वरूप लगाया जा सकता है।

जनसंख्या किसी भी राष्ट्र के लिए अमूल्य पूँजी होती है, जो वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन करती है, वितरण करती है और उपभोग भी करती है। जनसंख्या देश के आर्थिक विकास का संवर्द्धन करती है। इसीलिए जनसंख्या को किसी भी देश के साधन और साध्य का दर्जा दिया जाता है। लेकिन अति किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती। फिर चाहे वह अति जनसंख्या की ही क्यों न हो? वर्तमान में भारत की जनसंख्या वृद्धि इसी सच्चाई का उदाहरण है।

अनुमान है कि 2025 तक भारत की जनसंख्या बढ़ कर 1.5 अरब हो जाएगी। वर्ष 2030 तक यह आबादी जहाँ 1.53 अरब हो जाएगी, वहीं 2060 तक यह बढ़ कर 1.7 अरब हो जाएगी। इतना

ही नहीं, 2030 में भारत चीन से भी आगे निकल जाएगा। भारत में इस बढ़ी हुई आबादी का 2030 में क्या परिणाम होगा, इसका अनुमान वर्ष 2008 में यदि लगाया जाए, तो स्थितियाँ चौंकाने वाली और डरावनी हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण पूरे देश की दो तिहाई शहरी आबादी को 2030 में शुद्ध पेय जल नसीब नहीं होगा। वर्तमान में पानी की प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति उपलब्धता जहाँ 1525 घन मी. है, वहीं 2025 में यह उपलब्धता मात्र 1060 घन मी. होगी। वर्तमान में प्रति दस हजार व्यक्तियों पर 3 चिकित्सक तथा 10 बिस्तर हैं, 2030 में उनके बारे में सोचना भी मुश्किल होगा।

आने वाले वर्षों में 2025 तक देश के सवा लाख से ज्यादा गाँवों के घरों में बिजली नहीं होगी। वर्तमान में जहाँ 3 करोड़ घरों की जरूरत है, तब आँकड़ा 10 करोड़ के भी पार होगा। भारत की जनसंख्या वृद्धि के लिए जिम्मेदार राज्यों में आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल देश की कुल आबादी का 14 प्रतिशत योगदान करते हैं, तो वहीं महाराष्ट्र, गुजरात इसमें 11 प्रतिशत की वृद्धि करते हैं। जनसंख्या वृद्धि के बोझ का ही यह परिणाम है कि एक तरफ जहाँ हमारी जमीन उर्वरकों के कारण अनउपजाऊ होती जा रही है, दूसरी तरफ़ वहाँ पैदावार कम होने के कारण लोग आत्महत्या करने को मजबूर हो रहे हैं।

चार दशक पीछे देखें, तो देश में गरीबी का प्रतिशत आधा रह गया है। सिर्फ शहर की 10 प्रतिशत आबादी का ही यह आँकड़ा 62 रुपये प्रतिदिन है। जनसंख्या वृद्धि का ही परिणाम है कि देश में शहरी आबादी के साथ ही साथ स्लम आबादी भी लगातार बढ़ती जा रही है। देश की कुल आबादी का 1.3 भाग झुग्गी, झोपड़ियों में रहता है अर्थात मुंबई में 1.63 लाख, दिल्ली में 1.18 लाख तथा कोलकाता में 1.49 लाख लोग स्लम सीमा में रहते हैं।

विश्व के कृषि भू-भाग का मात्र 2.4 प्रतिशत भारत में है, जबकि यहाँ की आबादी दुनिया की कुल आबादी का 16.7 प्रतिशत है। ये दो मोटे आंकड़े इस बात को सिद्ध करने के लिए काफी हैं कि जनसंख्या के मामले में विश्व से हम अलग हैं। विश्व में सबसे पहले 1952 में आधिकारिक रूप से जनसंख्या नियंत्रण हेतु परिवार नियोजन कार्यक्रम को अपनाया जाने लगा। सोच की जड़ता सामने आ चुकी है। भारत जनसंख्या के मामले में चीन के बाद दूसरा स्थान रखता है। लेकिन वह दिन दूर नहीं, जब हम चीन को भी पीछे छोड़ देंगे, इस बात का पक्का सबूत यह है कि चीन की वार्षिक जनसंख्या वृद्धि जहाँ महज 1 प्रतिशत है, वहीं हम भारतवासी जनसंख्या की वृद्धि दर

2 प्रतिशत प्रतिवर्ष किए हुए हैं। पूरे विश्व से हम आगे हैं।

विश्व में प्रति मिनट जहाँ कुल 150 शिशु जन्म लेते हैं, वहीं भारत में अकेले यह आँकड़ा प्रति मिनट करीब 60 है। भारत में इस समय जमकर भ्रष्टाचार की जो आँधी गाँव की पगडण्डी से दिल्ली तक चल रही है, उसमें इसी जनसंख्या वृद्धि का हाथ शामिल है। अधिक जनसंख्या से एक ओर हम आर्थिक असुरक्षा महसूस करते हैं, तो दूसरी ओर इस असुरक्षा से निकलने के लिए भ्रष्टाचार का दामन थामते हैं। यही विचारणीय प्रश्न है।

भारत की आबादी 2001 की जनणना में एक अरब के आश्चर्यजनक आँकड़े को पार कर 102.87 करोड़ हो गई थी। जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि-दर वर्ष 2001 में कम होकर 1.95 प्रतिशत रह गई। बावजूद इसके भारत की जनसंख्या की वृद्धिदर विकसित देशों की तुलना में तथा विकासशील देशों की तुलना में भी बहुत अधिक है। भारत में 1 अप्रैल, 2010 से जनगणना-2011 आरम्भ हो गई है।

जनसंख्या नियंत्रण एक संवेदनशील सामाजिक मुद्दा है। परिणाम स्वरूप हम आज जनसंख्या की मार से ही चारों खाने चित्त हैं। सच्चाई सिर्फ जनसंख्या वृद्धि की नहीं जनमानस की सोच का जड़वादी होना भी है, क्योंकि भारत ही वह एकमात्र देश है, जहाँ 21वीं सदी में भी बच्चों का जन्म भगवान की देन माना जाता है। पढ़े-लिखे लोग भी यह समझने को तैयार नहीं हैं कि जनसंख्या वृद्धि स्वयं के हाथों में है, जिसे हम चाहें, तो रोक सकते हैं।

भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारणों की यदि जाँच की जाए, तो हमें ऐसे विचार मिल जाएंगे, जिन्हें समझना और समझाना किसी के बस में नहीं। गाँवों में ऐसे लोगों को देखा जा सकता है, जो वह तर्क देते मिल जाएंगे कि जितने हाथ होंगे उतना काम होगा। यह देश का दुर्भाग्य है कि हम सब यह सोच नहीं पाते कि दो हाथों के साथ-साथ एक पेट भी होता है, जिसकी अपनी जरूरतें होती हैं। लोगों का मानना है कि मृत्यु-दर कम हो गई है, जीवन प्रत्याशा बढ़ गई है, प्रजनन व स्वास्थ्य सेवाएं पहले से बेहतर हैं। लोग असमय मौत का शिकार नहीं होते। इसी कारण जनसंख्या बढ़ी हुई प्रतीत होती है। गाँवों में टेलीविजन की पहुँच होगी और जनसंख्या वृद्धि पर लगाम लगाई जा सकेगी।

此为试读,需要完整PDF请访问: www.ertongbook.com

वर्ष 2007 में विश्व जनसंख्या 6,612 मिलियन में भारत की जनसंख्या 1,123 मिलियन थी। इस हिसाब से विश्व की कुल जनसंख्या में भारत का भाग 16.98 प्रतिशत है। भारत की जनसंख्या वृद्धि-दर कई देशों की तुलना में कम है, किंतु ऐसे देश जनसंख्या के आकार में छोटे हैं। पड़ोसी देश पाकिस्तान और बांग्लादेश की जनसंख्या वृद्धि-दर भारत से बहुत अधिक है। विकसित देशों में जनसंख्या वृद्धि-दर नियंत्रण में है, जबकि विकासशील देशों में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। भारत में जनसंख्या की वर्तमान वृद्धिदर के चलते इसके निकट भविष्य में जनसंख्या के आकार में चीन से आगे निकल जाने की संभावना है। विश्व जनसंख्या दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम में गांवों में विद्युतीकरण से जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण में मदद मिल सकती है। बिजली के कारण घरों में टेलीविजन की पहुंच होगी, जिससे जनसंख्या वृद्धि नियंत्रित होगी। जब बिजली नहीं रहती है, तो लोग जनसंख्या वृद्धि की प्रक्रिया में लग जाते हैं।

राजस्थान को वर्ष 2011 तक जनसंख्या वृद्धि से बेहद मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। राष्ट्रीय जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम के राष्ट्रीय सलाहकार एंटोनी ने कहा कि राज्य की जनसंख्या वर्ष 2011 तक 7 करोड़ तक पहुँच जाएगी। दक्षिण राज्यों में जहाँ जनसंख्या कम हो रही है, वहीं उतरी राज्यों में जनसंख्या वृद्धि दर ज्यादा है। वर्ष 1951 में राजस्थान की जनसंख्या एक करोड़ पचास लाख थी, जो 2001 में चार गुना बढ़कर पाँच करोड़ पैंसठ लाख तक पहुँच गई। उधर, तमिलनाडु में वर्ष 1951 में करीब तीन करोड़ जनसंख्या थी, जो 2001 में दोगुनी से कुछ अधिक 6 करोड़ चौबीस लाख तक ही पहुँची है। जन्मदर के आँकडों के अनुसार राजस्थान में वार्षिक वृद्धि दर 2.53 प्रतिशत है, जबकि तमिलनाडु में 1.46 प्रतिशत ही है। राजस्थान में 18 साल तक की उम्र में 58.4 प्रतिशत युवतियों की शादी कर दी जाती है। केरल में 17.2 प्रतिशत और तमिलनाडु में 25.2 प्रतिशत ही लड़कियाँ ऐसी हैं, जिनकी शादी 18 साल तक की उम्र में हुई है।

व्यक्ति केवल दो बच्चों की सोच तक ही सीमित रहे, ताकि जनसंख्या पर नियंत्रण रह सके। इसके प्रति जागरुकता के लिए शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। 'बच्चे भगवान की देन होते हैं' वाली मानसिकता का त्याग करना ही होगा, नहीं तो यदि हमने समय रहते ही जागरुक प्रयासों से बढ़ती जनसंख्या को नहीं रोका, तो एक दिन भूख और प्यास से हम खुद ही त्रस्त होंगे। प्रति व्यक्ति की जागरुकता और प्रति व्यक्ति की शिक्षा के बिना ऐसा सम्भव नहीं है। आने

वाली पीढ़ियों को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए जनसंख्या पर नियंत्रण जरुरी है।

जनसंख्या वृद्धि की गति से मानव की आवश्यकताओं और संसाधनों की पूर्ति करना असंभव होता जा रहा है। इससे जीवन मूल्यों में गिरावट आ रही है। अमीर और अमीर होते जा रहे हैं, गरीब और गरीब। अमीर-गरीब के बीच की खाई गहराती जा रही है। पर्यावरण विषाक्त करने में भी जनसंख्या एक प्रमुख कारण है। इन सारी बातों पर गौर करें, तो यही निष्कर्ष निकलकर आता है कि जनसंख्या पर नियंत्रण युद्ध स्तर पर करना होगा।

शब्दार्थ

सावधान	वि.	警惕的，谨慎的，小心的
दावा	पु.	断言，宣称
बुद्धिजीवी	पु.	知识分子
सेमिनार	पु.	研讨会
कोसना	स.क्रि.	责骂，咒骂
घोषणा	स्त्री.	宣布，宣告
ठोस	वि.	具体的，坚定的
एमएलए	पु.	立法会议议员
एमपी	पु.	议会议员
जागरूकता	स्त्री.	觉悟，觉醒，警惕
पारितोषक	पु.	奖赏，奖金
आरक्षण	पु.	保护，保留
अप्रत्यक्ष	वि.	间接的，不明显的，隐蔽的
कर	पु.	税
दन्ड	पु.	处罚，惩罚
पूँजी	स्त्री.	资本

वितरण	पु.	分配，供应
उपभोग	पु.	享受
संवर्द्धन (संवर्धन)	पु.	提高，发展，扩充，增加
साध्य	पु.	目标
दर्जा	पु.	程度，水平，等级
अति	स्त्री.	极端，过分
चौंकाना	स.क्रि.	使吃惊
तिहाई	स्त्री.	三分之一
शुद्ध	वि.	纯的，清洁的
पेय	वि., पु.	可饮用的；饮料
घन	पु.	立方
चिकित्सक	वि., पु.	医疗的，医务的；医生，医务工作者
आँकड़ा	पु.	数字，数据
जिम्मेदार	वि.	负责的，有责任的
प्रतिशत	अ.	百分之……
बोझ	पु.	重物，重量，负担，责任
खाद	स्त्री.	肥料
अनउपजाऊ	वि.	贫瘠的，不肥沃的
स्लम	पु.	贫民窟
झुग्गी	स्त्री.	茅屋
झोपड़ी	स्त्री.	茅屋
नियोजन	पु.	限制，限定
अपनाना	स.क्रि.	采取，采用
जड़ता	स्त्री.	无知，迟钝
सबूत	पु.	证据，证明

शिशु	पु.	婴儿
भ्रष्टाचार	पु.	腐败
आँधी	स्त्री.	风暴
पगडण्डी	स्त्री.	小路，羊肠小道
असुरक्षा	स्त्री.	不安全
दामन	पु.	衣襟
विचारणीय	वि.	值得思考的
आश्चर्यजनक	वि.	令人惊讶的
औसत	वि.	平均数；中等的，平均的
दर	स्त्री.	率
विकसित	वि.	发达的，发展了的
विकासशील	वि.	发展中的
संवेदनशील	वि.	敏感的，易动感情的
चारों खाने चित्त होना	मु.	失败
जन-मन	पु.	人心（指感情、意向、愿望等）
जड़वादी	वि., पु.	唯物主义的（者）
बस	पु.	力量
तर्क	पु.	逻辑，论证，推断，思考
मृत्यु (मौत)	स्त्री.	死亡
प्रत्याशा	स्त्री.	预期
प्रजनन	पु.	生育，繁殖
आकार	पु.	外貌，形状；规模，大小
विद्युतीकरण	पु.	电气化
गुना	पु.	倍
दोगुना	वि.	两倍的

युवती	स्त्री.	女青年
बढ़ावा	पु.	鼓励
त्याग	पु.	放弃，抛弃；辞职
त्रस्त	वि.	惊慌失措的，不安的，受折磨的
खाई	स्त्री.	鸿沟，壕沟
विषाक्त	वि.	有毒的，污染的
निष्कर्ष	पु.	结论

टिप्पणियाँ

1. **परिवार नियोजन कार्यक्रम**：家庭控制计划，也就是“计划生育”。印度是世界上最早提出计划生育的国家，1952 年就提出了 **परिवार नियोजन कार्यक्रम** 。但印度的计划生育政策实施得并不理想。为了推行这一政策，英迪拉·甘地执政时期曾一度采取极端做法，强制妇女做绝育手术，引起群众强烈反对，成为导致国大党竞选失败的主要原因之一。
2. **नहीं तो यदि हमने समय रहते ही जागरुक प्रयासों से बढ़ती जनसंख्या को नहीं रोका, तो एक दिन भूख और प्यास से हम खुद ही त्रस्त होंगे।** 译：否则，如果我们不趁现在还有机会清醒地努力限制住急速增长的人口，总有一天我们都会受到饥渴的折磨。这里 **समय रहते** 是指“还有时间”或“时机还没失去的时候”。

अभ्यास

I. **निम्न सवालों के जवाब दीजिए।**

1. अपने कार्यकाल में सरकार जनसंख्या के बारे में क्या कहती है?

2. सरकार कौन सी आशा करती है?

3. क्या सरकार की आशा पूरी हो सकती है और क्यों?

4. जनसंख्या वृद्धि का समाधान कैसे शुरू होना चाहिये?

5. बड़ी जनसंख्या की कौन सी भलाइयाँ हैं?

6. बड़ी जनसंख्या की कौन सी कमियाँ हैं?

II. निम्नलिखित कथनों में से जो सही हो, उसके सामने कोष्ठक में ✓ लगाइए और जो सही नहीं हो, उसके सामने कोष्ठक में × लगाइए।

1. (   ) 2011 में भारत में प्रति व्यक्ति को 1525 घन मीटर का पानी मिल सकता है।
2. (   ) पैदावार कम होने का जनसंख्या वृद्धि से संबंध है।
3. (   ) सारी दुनिया में भारत की जनसंख्या वृद्धि-दर सब से ज़्यादा है।
4. (   ) 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की औसत वार्षिक वृद्धिदर 1.95 प्रतिशत थी।
5. (   ) 2007 में भारत की जनसंख्या 1,123 मिलियन थी।
6. (   ) विश्व की कुल जनसंख्या में भारत का भाग 16.98 प्रतिशत है।
7. (   ) राजस्थान की जनसंख्या वर्ष 2011 तक पाँच करोड़ पैंसठ लाख तक पहुँच जाएगी।
8. (   ) तमिलनाडु में 1951 की तुलना में 2001 में जनसंख्या दोगुनी से कुछ अधिक है।
9. (   ) अब तमिलनाडु की वार्षिक वृद्धि दर राजस्थान से ज्यादा है।
10. (   ) दक्षिणी राज्यों में जनसंख्या कम हो रही है और उतरी राज्यों में जनसंख्या वृद्धि दर ज्यादा है।

III. पाठ के अनुसार सही जवाब चुनकर दीजिए।

1. 2025 तक भारत की जनसंख्या बढ़कर____________________हो जाएगी।

   क. 1.7 अरब

此为试读，需要完整PDF请访问： www.ertongbook.com